भैडा की ढाणी में नहीं निकलता घरों से पानी

दो दशक से गांव के लोग कर रहे हैं अपने स्तर पर जल प्रबंधन

झुन्झुनू । जिला मुख्यालय से सटी भैडा की ढाणी का जल प्रबंधन आज के हालात में आदर्श बना हुआ है। गांव दो हिस्सों में बंटा है एक उत्तरी और दूसरा दक्षिणी। दोनों ही हिस्सों के लोग अपने आप को आगे रखते है। उनके बीच में जल प्रबन्धन प्रतिस्पर्द्धा बन गई। जल प्रबन्धन की दिशा में सरकार भले ही अब प्रचार–प्रसार में जोर दे रही हो, लेकिन इस गांव के लोग दो दशक से अपने स्तर पर इस दिशा में काम कर रहे है।

(भैडा की ढाणी के साफ–सुथरे आम चौक का नजारा)

(भैडा की ढाणी के आम चौक से गांव की ओर जाता मुख्य रास्ता, जहा कहीं भी गंदगी या घरों का गंदा पानी नहीं है)

गांव के दोनो हिस्सों में अच्छी सफाई है। गांव का चौक हो या फिर गुवाडी, कहीं भी कचरा या गन्दा पानी नजर नहीं आता। गांव में करीब सवा सौ घर हैं और सब घरों में सोखते गड्ढे बने हुए है। घर के परिंडे से लेकर रसोईघर और स्नानघर का पानी तक इन सोखती कुइयों में पहुंचता है। साढे सात सौ की आबादी वाले इस गांव के घर–घर में जल प्रबन्धन साफ झलकता है। गांव में पंचायत की जल सप्लाई है। यहां हर घर के कनेक्शन में नल लगे हुए हैं। गांव के लोग इतना ही पानी लेते हैं, जितनी उनकी जरूरत होती है। किसी भी घर में लीकेज या टपकता हुआ नल नहीं मिलेगा।

(भैडा की ढाणी में नहाने के पानी का निस्तारण के लिए बाथरूम के पास बनी सोखती कुई)

गांव का हर घर जल प्रबन्धन में आइडियल है। घर में लगे नल अच्छी क्वालिटी के है, वहीं पानी स्टोरेज भी अच्छा है। स्नानघर व शौचालय के बाहर भी पक्का फर्श होता है। नहाने का पानी हो या कपडे धोने के बाद का गंदा पानी, बाथरूम से निकलने वाला पूरा पानी ढकी हुई नाली के माध्यम से जमीन में पहुंचाया जाता है। इसके लिए बाथरूम के पास कई घरों में अलग से सोखती कुइयां बनी हुई है। कुछ लोग बाथरूम के पानी को पहले पेड में पहुंचाते हैं। वहां से नाली के माध्यम से ही बचा हुआ पानी सोखती कुई में पहुंचाया जाता है।

(भैडा की ढाणी के घरों के बाहर बनी पक्की नालियां, जो बाहर बने सोखते कुओं से जुडी हुई है।)

घर–घर में पक्की नालियां बनी हुई हैं। ज्यादातर घरों में तो अन्दर की साइड ही सोखती कुइयां बनी हैं। कुछ घरों में बाहर तक पक्की नालियां बनी हैं। ये नालियां भी पूरी तरह कवर होती हैं और इनका मुहाना बाहर की ओर बने बडे सोखते कुवे में पहुंचता है। इसी प्रकार गांव में लगे हैण्डपम्प व जीएलआर पर भी किसी तरह का कीचड या गन्दगी नजर नहीं आती। गांव के लोग सफाई का पूरा ध्यान रखते हैं।

(भैडा की ढाणी में बर्तन धोने के लिए टंकी के पास बनी चबूतरी व नाली से सोखती कुई में जाता पानी)

इतना ही नहीं, गांव की सफाई और जल प्रबन्धन में महिलाओं का भी महत्वपूर्ण रोल है। वे रोज सुबह घर व गुवाड की सफाई करती हैं। नालियों की सफाई करती हैं। उपयोग योग्य पानी को क्यारी में डालकर सब्जियां व पौध तैयार करती है। यहां तक की बर्तन सफाई भी ऐसी जगह करती है, जहां से गंदा पानी इधर–उधर न बिखरे। इसके लिए टंकियों के पास छोटी चबूतरी बनाकर रखती है। इसके ढलाने की ओर नाली बनाकर इसे सोख्ती कुई से जोड दिया जाता है।

प्रस्तुति :–
नागेश कुमार स्वामी
आई.ई.सी. एवं इक्विटी कंसलटेंट
झुन्झुनू